

पशुओं को संतुलित आहार खिलायें उत्पादन बढ़ायें

(*डॉ. अर्जुन लाल प्रजापत)

श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान- 303329

* prajapatasu@gmail.com

जिस प्रकार खेती के लिए खाद, पानी की आवश्यकता होती है। इन्जन को चलाने के लिए डीजल की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार पशुओं को जीवित रहने तथा शारीरिक वृद्धि एवं उत्पादन के लिए संतुलित पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है।



संतुलित आहार क्या है : चारा एवं दाने का वह मिश्रण जो पशु की समस्त आवश्यकताओं को उचित मात्रा में देने पर पूर्ण करता हो, वह संतुलित आहार कहलाता है।

पशुओं को आहार कैसे दें : यदि आप चाहते हैं कि पशु जीवन पर्यन्त उत्पादक और पुष्ट बना रहे तो उसे अच्छी तरह वैज्ञानिक ढंग से खिलायें। पशुओं को आहार निम्नप्रकार से खिलायें :-

1. सूखा चारा – इसे पर्याप्त मात्रा में पेटभर सभी पशुओं को खिलायें। सूखे चारे जो सख्त होते हैं, उनकी कुट्टी करके दें, कभी भी सूखा चारा बिना काटे न दें।
2. भूसा – इसे दाने के साथ पानी में भिगोकर सानी बनाकर दें। इसे कुछ देर भीगने दें, फिर खिलायें।

3. हरा चारा – खेत में चराएं या काटकर दें। दलहनी चारे, अदलहनी चारे अथवा भूसे के साथ खिलायें। केवल दलहनी चारा अधिक मात्रा में देने से आफरा हो जाता है। इसी तरह ज्वार की कटाई पहली बार 60 दिन बाद या बरसात के बाद करें, तब पशुओं को खिलायें। कम उम्र की मुरझाई हुई ज्वार कभी भी पशुओं को न खिलायें अन्यथा हाइड्रोसायनिक अम्ल पशुओं के लिए प्राणघातक हो सकता है।
4. सांद्र आहार – इसे स्वादिष्ट एवं मुलायम बनाने हेतु पानी में भिगोकर रखने अथवा पकाने के उपरान्त खिलाना चाहिए। सान्द्र आहार में जौ, मक्का, चना, मटर आदि दलकर खिलाना चाहिए। यदि खली अलग से खिलानी हो तो इसे भी भिगो लेना चाहिए।

पशुओं को आहार कब दें :- विभिन्न पशुओं के लिए आहार की मात्रा, आहार देने के तरीके के साथ ही साथ, आहार देने का समय भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योंकि अच्छे से अच्छा आहार भी उचित समय पर नहीं देने से पशु के लिए व्यर्थ है।

- पशु को सामान्यतः दिन में 2 बार 5 या 10 घंटे के अंतराल पर आहार देना चाहिए।
- अधिक उत्पादक पशुओं को दाने की अधिक मात्रा देनी होती है। अतः इन्हें दिन में 4 से 5 बार चारे के साथ दाना एवं हरा चारा खिलाना चाहिए।
- केवल दाने की अधिक मात्रा देने से पाचन शक्ति बिगड़ जाती है एवं दुग्ध उत्पादन भी घट जाता है।
- दुधारु पशुओं को दूध निकालने से पूर्व दाना एवं दूध निकालने के बाद चारा देना चाहिए।
- पशुओं को आहार के साथ-साथ प्रतिदिन 30 से 50 ग्राम खनिज लवण एवं 25-50 ग्राम नमक अवश्य देना चाहिए।

पशु आहार में खनिज लवण का महत्व :- पशुओं को स्वस्थ रखने, विभिन्न रोगों से बचाने एवं उनकी उत्पादन क्षमता बनाए रखने के लिए खनिज लवण मिश्रण दिया जाना अतिआवश्यक है। इस मिश्रण में सभी आवश्यक खनिज तत्व संतुलित मात्रा में होने चाहिए, क्योंकि ये पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। पशु आहार में एक या एक से अधिक खनिज तत्वों की कमी से न केवल विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं, बल्कि पशु की उत्पादन क्षमता घट जाती है।

खनिज लवण मिश्रण में कैल्शियम, फास्फोरस, तांबा, कोबाल्ट, जिंक, आयरन एवं सोडियम खनिज तत्वों का होना आवश्यक है।

कैल्शियम- यह खनिज लवण मिश्रण का मुख्य तत्व है इसकी कमी से बछड़ों में रिकेट्स तथा बड़े पशुओं में आस्टीयोमलेशिया नामक बीमारी हो जाती है। ब्याई हुई अधिक उत्पादन वाली गाय/भैंस में कैल्शियम की कमी से मिल्क फीवर नामक बीमारी हो जाती है। जिससे दूध उत्पादन घट जाता है। अतः ब्याई हुई गाय/भैंस तथा गर्भवती मादा को अतिरिक्त कैल्शियम देना चाहिए।

फास्फोरस- यह दूसरा मुख्य तत्व है। इसकी कमी से पशुओं को भूख कम लगती है, तथा 'पाइका' नामक बीमारी से पशु ग्रसित हो जाते हैं। जिसके कारण पशु लकड़ी, मिट्टी, कपड़े, गंदगी खाने लग जाते हैं।

आयरन- इसकी कमी से एनीमिया नामक रोग हो जाता है।

आयोडीन- गर्भावस्था के दौरान इस तत्व की कमी से पैदा होने वाले बच्चे कमजोर व कभी-कभी मृत होते हैं।

तांबा- यह पशुओं में सामान्य उत्पादन एवं प्रजनन के लिए आवश्यक है।

कोबाल्ट- इस तत्व की कमी से पशु कमजोर होने लगते हैं एवं भूख बिल्कुल मर जाती है।

जिंक- इसकी कमी से सामान्य से बढ़वार कम हो जाती है।

सोडियम— इसकी आवश्यकता साधारण नमक से पूरी हो जाती है। साधारण नमक न केवल स्वाद के लिए आवश्यक है बल्कि यह भूख भी बढ़ाता है।

सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से पशुओं में निम्न व्याधियां होती है—

1. मादा पशुओं का गर्मी में आना अनियमित हो जाता है।
2. पशुओं की बढ़वार रुक जाती है।
3. गर्भधारण की क्षमता घट जाती है।
4. बाल कड़े एवं खड़े हो जाते हैं।
5. पशु चारा कम खाता है।

पशुओं को आहार की दैनिक आवश्यकता				
क्र. स.	पशु	सूखा चारा कि. ग्रा.	अदलहनी हरा चारा	दाना-बॉट कि. ग्रा.
1.	बछड़े एवं बछड़ी	2-3	5-20	0.25-0.5
2.	ग्याभिन बछड़ी	2-3	5-20	0.25-0.5
3.	गर्भावस्था के 1, 2, 3 माह में	4-6	20-25	0.5-1.0
4.	गर्भावस्था के 4, 5, 6 माह में	4-6	20-25	1.0-1.5
5.	गर्भावस्था के 7, 8, 9 माह में	5-6	20-25	1.5-2.0
6.	ग्याभिन दूध न देने वाली भैंस/गाय	6-8	20-25	1.5-2.0
7.	5 लीटर दूध देने वाली भैंस/गाय	5-6	20-25	1.5-2.0
8.	10 लीटर दूध देने वाली	6-8	20-25	3.0-3.5
9.	15 लीटर दूध देने वाली	6-8	35-40	5.0-6.6
10.	प्रजनन हेतु सांद्र	6-9	20-25	2.0-2.5

दुधारु भैंसों/गायों के लिए मौसम अनुसार आहार व्यवस्था			
दुग्ध उत्पादन	रबी कि. ग्रा.	खरीफ कि. ग्रा.	हरा चारा सीमित होने पर कि. ग्रा.
5-7 कि. ग्रा.	दलहनी चारा 35-40 अदलहनी चारा 15-20 भूसा चारा 3 कि. ग्रा.	ज्वार/मक्का/बाजरा का चारा 40-50 कि. ग्रा. सांद्र आहार 2 कि. ग्रा.	हरा चारा 20 कि. ग्रा. भूसा 5 कि. ग्रा. सांद्र आहार 4 कि. ग्रा.
8-10 कि. ग्रा.	दलहनी 35-40 अदलहनी 15-20 भूसा 4 सांद्र आहार 2, 2.5	ज्वार/मक्का/बाजरा का चारा 40-50 कि. ग्रा. सांद्र आहार 4 कि. ग्रा.	हरा चारा 20 कि. ग्रा. भूसा 5 कि. ग्रा. सांद्र आहार 6 कि. ग्रा.
10-12 कि. ग्रा.	दलहनी 35-40 अदलहनी 15-20 भूसा 3 सांद्र आहार 3	ज्वार/मक्का/बाजरा का चारा 40-50 कि. ग्रा. सांद्र आहार 4 कि. ग्रा. बिनौला चना 2	हरा चारा 20 कि. ग्रा. भूसा 5 कि. ग्रा. सांद्र आहार 5 बिनौला चना 2
12-14 कि. ग्रा.	दलहनी 30-35 अदलहनी 20 भूसा 3 सांद्र आहार 4	ज्वार/मक्का/बाजरा का चारा 50 कि. ग्रा. सांद्र आहार 5 कि. ग्रा.	हरा चारा 20 कि. ग्रा. भूसा 5 कि. ग्रा. सांद्र आहार 5 बिनौला चना 2
14-16 कि. ग्रा.	दलहनी चारा 40-50 अदलहनी 20 भूसा 2 सांद्र आहार 5	ज्वार/मक्का/बाजरा का चारा 50-60 कि. ग्रा. सांद्र आहार 4 बिनौला चना 2	हरा चारा 20 कि. ग्रा. भूसा 5 कि. ग्रा. सांद्र आहार 5 बिनौला चना 1